

आदम औज़ि हव्वाइ पाप कियौ



Bangani

आदम औज़ि हव्वाइ पाप कियौ

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india





<http://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/>

You are free to make commercial use of this work. You may adapt and add to this work, but you may distribute the resulting work only under the same or similar license to this one. You must keep the copyright and credits for authors, illustrators, etc.

Big Book in Bangani language
Orange Level Book

परकाशण:-

NLCI

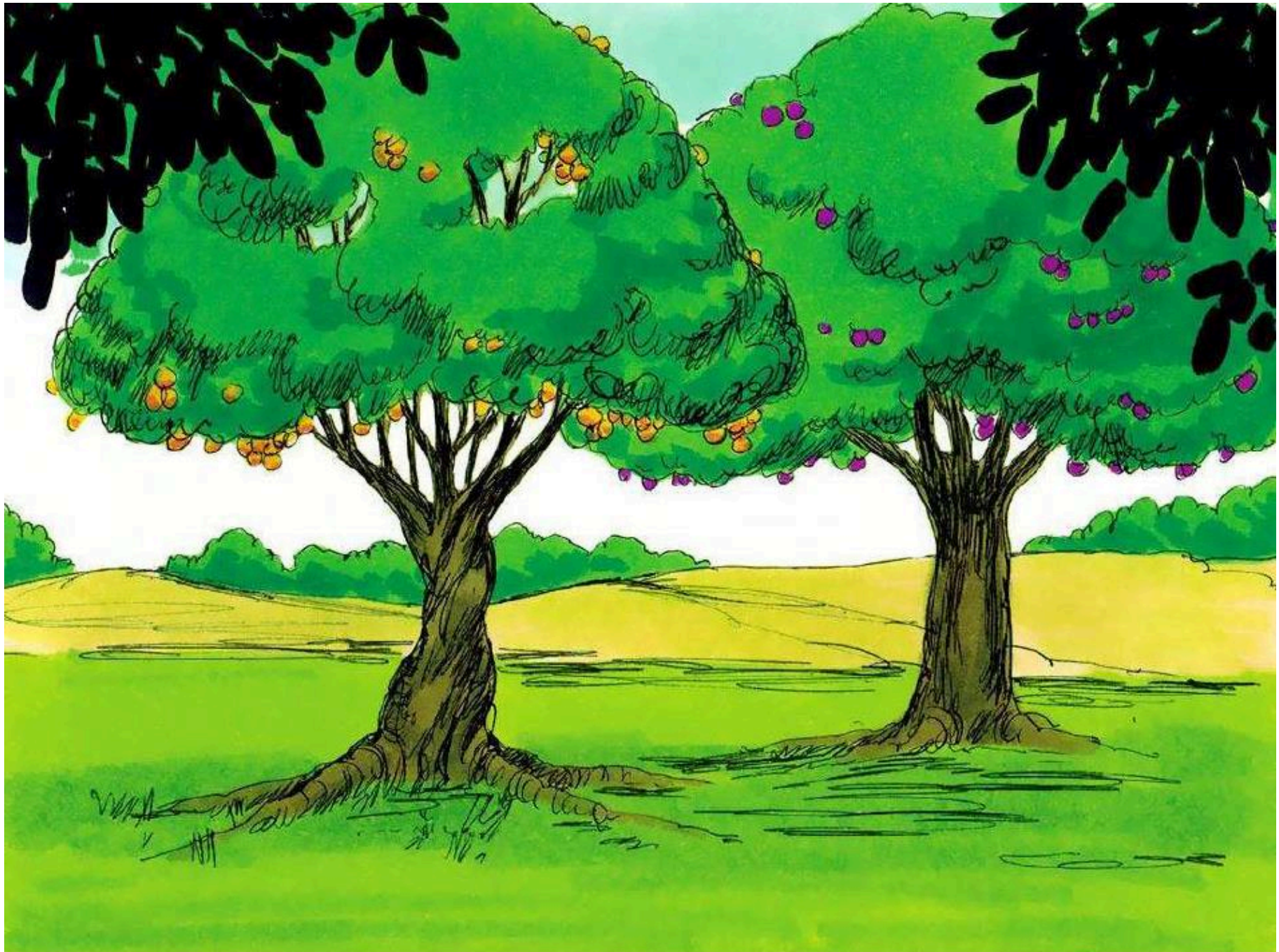
बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

हम बंगाणी क्षेत्र में साक्षरता कार्यक्रम चला रहे हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ना लिखना सीख सकें। उसी आधार पर इस किताब को भी तैयार किया गया है। यह एक कहानी की किताब है जिसमें आदम और हव्वा ने कैसे पाप किया, उसके बारे में बहुत ही सरल रीति से बताया गया है इस कहानी को हमने अपनी मातृभाषा में ही तैयार किया है जिससे वह इस कहानी को आसानी से समझ सके। और अपनी मातृभाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास भी कर सकें।



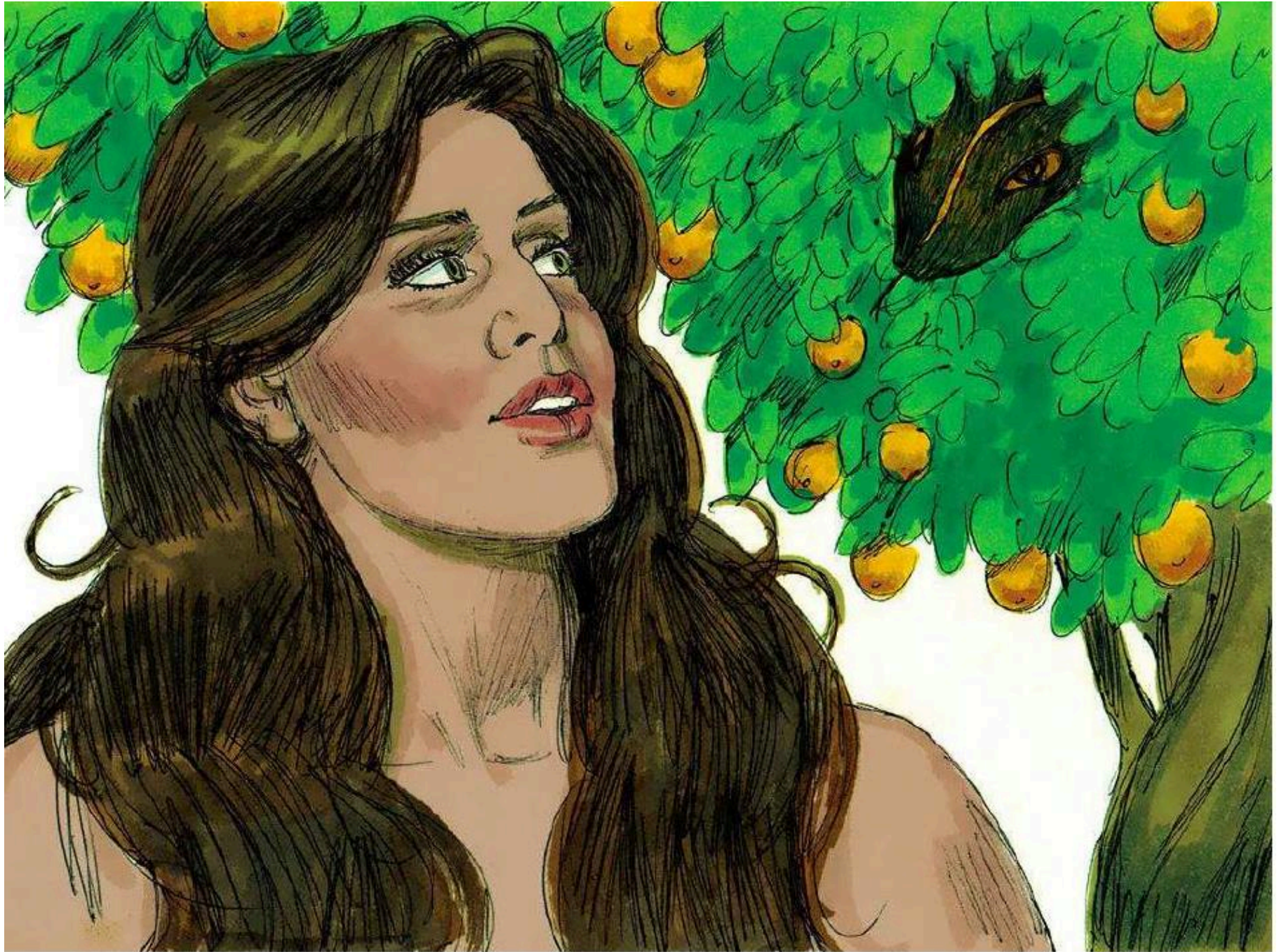
सारिउं कौइ औगौणिकै परमेश्वरेइ पुरी दुनिया
चाणी। औज़ि छौटुवौ दुसै परमेश्वरेइ आदम
चाणौ परमेश्वरेइ आदम केखि रौणेखि अदन रौ
बौगिचौ चाणौ ज़िन्दै सेऊ काम कौरै लौ औज़ि
बौगिचे रि चोकिदारि कौरै लौ।



परमेश्वरेइ सेउ बौगिचौ आदम औज़ि हव्वा
केखि चाणौ ज़ेस्दी तिणी जीवन रौ औज़ि बौलै
बुरै ज्ञान रौ पेड़ बि लाओ। तै परमेश्वरेइ आदम
औज़ि हव्वा कै आदेश देणौ, तु बौगिचै रै सारै
पेड़ु रै फळ खाइ सौकै, पर बौलै बुरै ज्ञान रै
पेड़ु रै फौळेइ कादि ना खा।



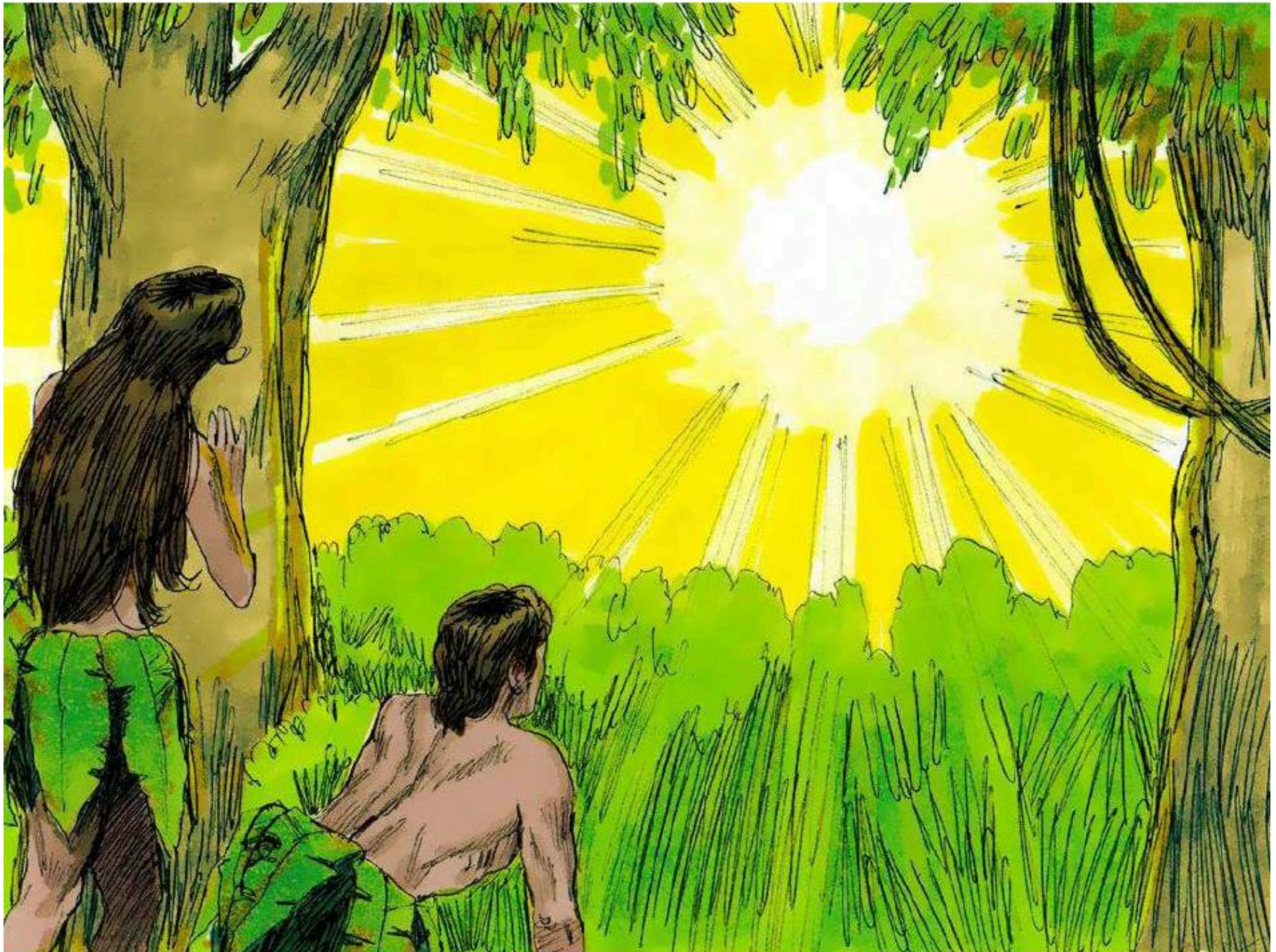
एक दूस सापेइ हव्वा कौइ पुछौ, का तुमैं
बौगिचै रै सारै फळ खाइ सौकैण? हव्वाइ
बोलौ, आमैं बौगिचै रै सारै पेड़ रै फळ खाइ
सौकी, पर जुणजौ पेड़ बौगिचै रै बिचे दि
लाओन्दौ, तेसरै बारे दि परमेश्वरेइ बोलौ, एस
पेड़ रौ फळ ना तै तुमैं खाइयौ, ना एस छुइंयौ,
नाइतै तुमैं पोरु मौरै लै।



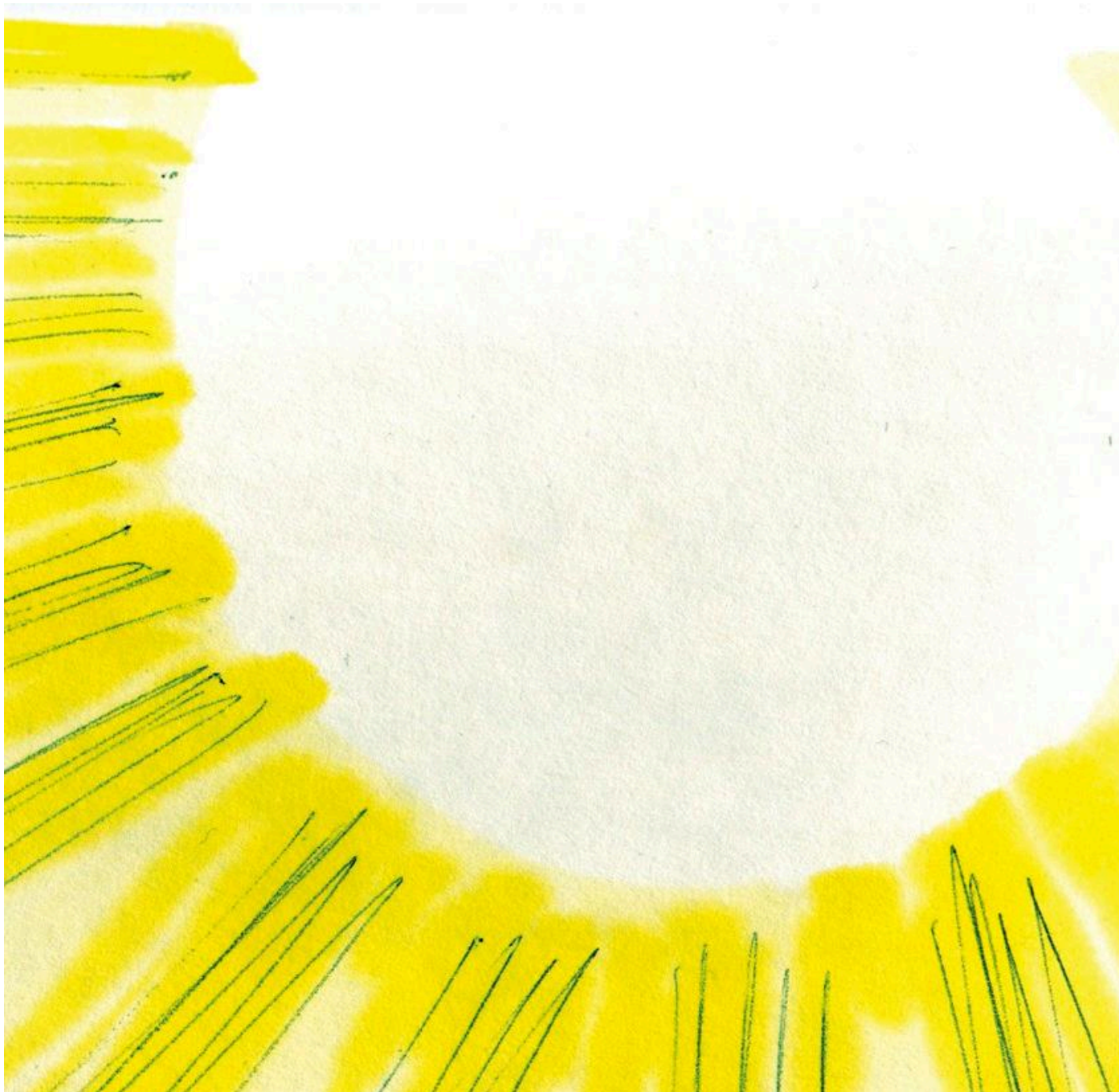
तैबै सापेइ हव्वा आरि बोलौ, एस खाइयौ तुमैं
ना मौरै लै। केलाकि परमेश्वर ज़ाणै कि ज़ुणजै
दुसै तुमैं एस फौळेइ खायै लै। सेजेइ दुसे
तुमारी आखै खुलै ली। औज़ि बौलै बूरै रौ ज्ञान
पाइयौ परमेश्वर रै बराबर बौणै लै।



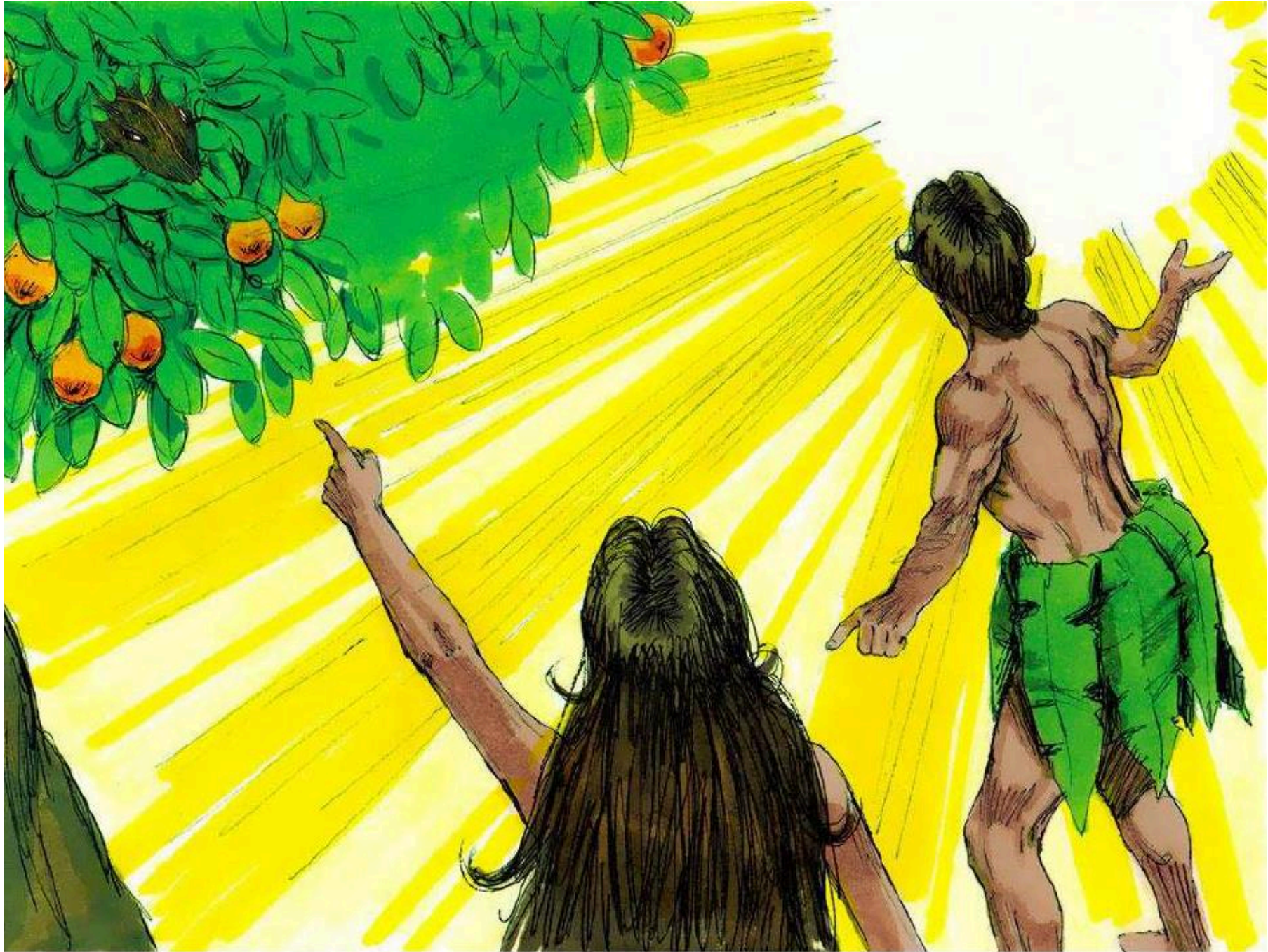
तैबै हव्वाइ देखौ, कि तेस पेड़ रौ फळ खाणें
खि बौड़िया औज़ि देखणे खि बि सुन्दर। तैबै
हव्वाइ तेस पेड़ै रौ फळ चोड़ियौ खाऔ।
औज़ि आदम कै बि देणौ, तै तिणी बि खाऔ।
तैबै तिउं दुइयाउं रै आखै खुलै, तै तिउंकै पौतौ
लागौ कि सै नांगिया।



जौ तिउंके पौतौ लागौ कि सै नांगिया। तै तिउं
अंजीर रै पाचू रै जुड़के चाणियो बिड़ै। तैबै
परमेश्वर रै आण्डणे रि आवाज़ शुणियो सै
दुइया पेड़ै पालै चोरुवै। तैबै परमेश्वर आदम
खि औटाउवौ, ए आदमा, केत्के तु?



आदमेइ बोलौ, आउं तेरी आवाज़ शुणियौं डौरि
मौरौ, केलाकि आउं नांगिया। परमेश्वरेइ आदम
आरि बोलौ, ताउंवारि कुणि बोलौ, कि तु
नांगिया। का ताइं तेस पेड़ रौ फळ खाइ गोअ?
जुणजै पेड़ै रौ फळ खाणे खि मुइं ताउंवारि ना
की थी।



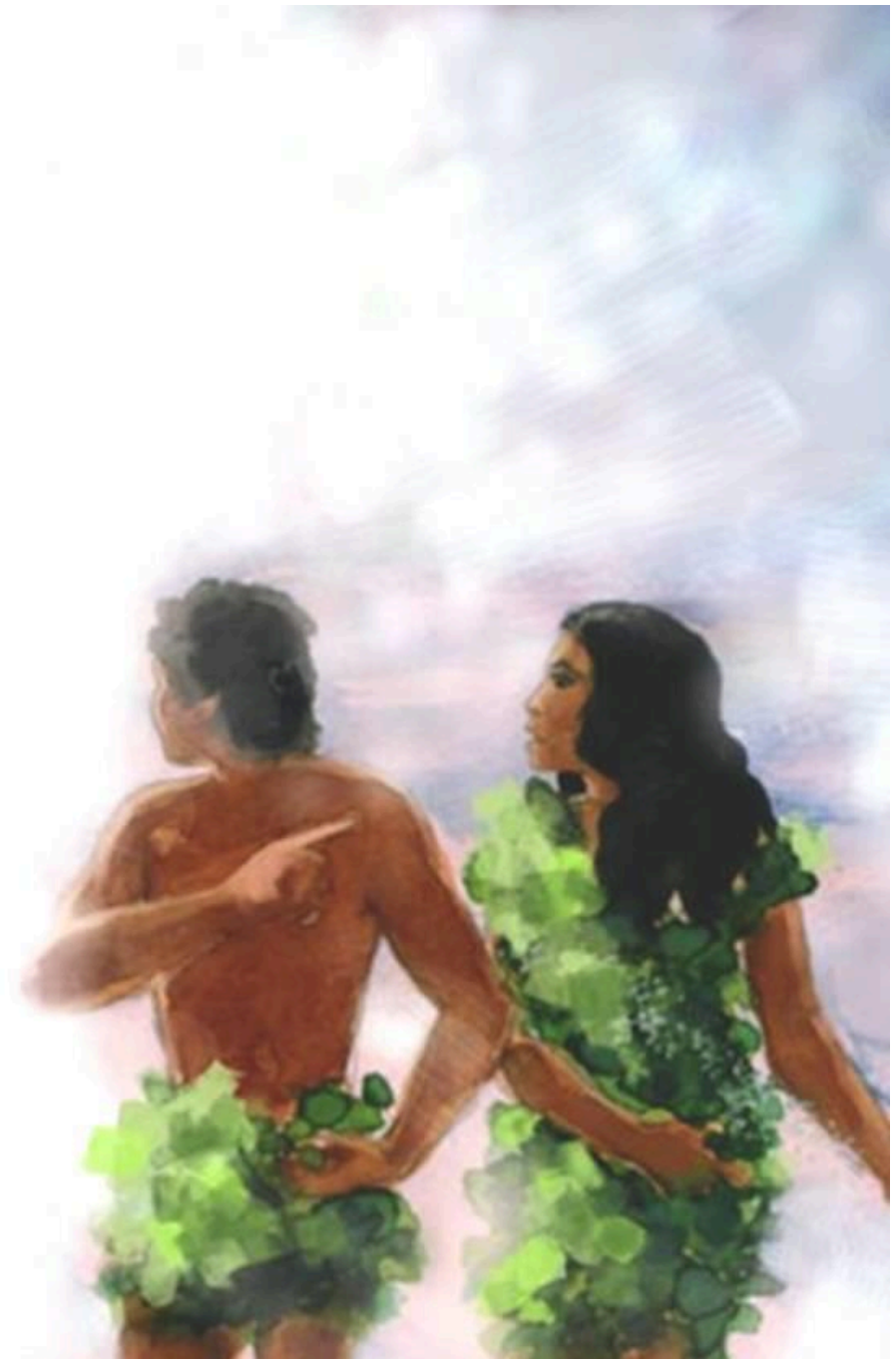
आदमेइ परमेश्वर आरि बोलौ, जुण्जी छेऊड
ताइं मेरै साथै रौणेखि चाणी, तियैं मुकौइ तेस
पेड़ रौ फळ खौआओ। तैबै परमेश्वरेइ हव्वा
आरि बोलौ, एऊ ताइं का कियौ? हव्वाइ
परमेश्वर आरि बोलौ, कि सापेइ ठौगाइ आउँ,
तैबेइ खाओ मुइं सेउ फळ।



तैबै परमेश्वरेइ सापै आरि बोलौ, एस काम
कौरने रि बौजै कौइ तु पुरी ज़िन्दगी बर पेटै
कौइ गिसरियो आन्डै लौ, औज़ि माटौ चाटै
लौ। आउँ तेरै औज़ि ईं छेऊड़ि रै वंश दि
दुश्मौनी पैदा कौरु, सै तेरी मुँटकी फिंचै लै,
औज़ि तु तिउँरै फिनोड़ेइ टुकै लौ।



तैबै परमेश्वरेइ हव्वा आरि बोलौ, औळखिन्दु
बैरै ताउँ बौरी डा लागै ली। तैबै परमेश्वरेइ
आदम आरि बोलौ, कि ताइं आपड़ि छेउड़ि रि
बुशै मानी। औज़ि जुण्जौ पेड़ै रौ फळ खाणेखि
मुइं ताउँकै ना की थी, ताइं तेसी पेड़ै रौ फळ
खाओ। एज़ी बौज़ै कौइ ईं दौरति दि श्राप
पौड़ी गोअ।



सै ताउं खि कान्दै ज़ौमाएली, औज़ि तु डोखरे
दि काम कौरै लौ। औज़ि मैनत रि रोटी खा
लौ। औज़ि आखरी दि माटे माइं मिलै लौ। तु
माटे माइं कौइ गाड़ौ, तु माटौ, औज़ि माटेइ
माइं मिलै लौ। तैबै परमेश्वरेइ आदम औज़ि
हव्वा कै च़ामड़ै रै जुड़कै बिड़ायै।



तैबै परमेश्वरेइ आदम औज़ि हव्वा अदन रै
बौगिचै कौइ बारै गाड़ै। ताकि सै बारै डेइयौ
डोखरे दि काम कौरै लै। औज़ि तेस बौगिचै रि
चोकिदारि कौरने खि स्वर्गदूत औज़ि
ज़ौळियौन्दि आगी रि तौलवारियै थौइ।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI संस्थान के द्वारा तैयार की गई है।

हम मातृभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें। और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मातृभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मातृभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मातृभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मातृभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मातृभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....धन्यवाद.....



This book was created with some Bloom Enterprise features enabled at no cost in order to support projects solely funded by the local community.